IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 2, Issue 3, November 2022
Impact Factor: 6.252

रवि कुमार गोंड़ के काव्य में निहित आदिवासी समाज : एक अवलोकन

लालजीत राम

असि० प्रोफेसर- हिन्दी

राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, आलापुर, अम्बेडकरनगर, उ०प्र०

शोध सारांश:- रवि कुमार गौड़ के काव्य में आदिवासी समाज का चित्रण संवेदनशीलता, यथार्थ और प्रतिरोध की चेतना के साथ उभरकर सामने आता है। उनके काव्य में आदिवासी जीवन की सरलता, प्रकृति के साथ गहरा संबंध और सामुदायिक संस्कृति का जीवंत रूप दिखाई देता है। वे जंगल, पहाड़, नदी और भूमि को केवल संसाधन नहीं, बल्कि जीवन का अभिन्न अंग मानते हैं। गौड़ अपने काव्य में यह भी दर्शाते हैं कि किस प्रकार आदिवासी समाज शोषण, विस्थापन और उपेक्षा का सामना करता रहा है। उनकी कविताओं में आधुनिक विकास की अंधी दौड़ के कारण आदिवासी अस्मिता पर पड़ने वाले खतरे को स्पष्ट रूप से उजागर किया गया है। वे सत्ता और व्यवस्था द्वारा किए जा रहे अन्याय के विरुद्ध स्वर उठाते हैं तथा आदिवासी जीवन के संघर्ष, पीड़ा और स्वाभिमान को अभिव्यक्ति देते हैं। साथ ही, उनके काव्य में आदिवासी संस्कृति, परंपराओं और लोकजीवन की गरिमा को भी महत्व दिया गया है। इस प्रकार, रवि कुमार गौड़ का काव्य आदिवासी समाज के यथार्थ का सशक्त दस्तावेज प्रस्तुत करता है, जिसमें उनकी पहचान, संघर्ष और अस्तित्व की रक्षा की भावना प्रमुख रूप से उभरती है।

Copyright to IJARSCT
www.ijarsct.co.in

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 2, Issue 3, November 2022 Impact Factor: 6.252

मूल शब्द– अस्मिता, मुख्यधारा, पितृसत्ता, लोकलाज, पैतृक धरोहर, प्रबल, महकमें, त्रासदी, समावेशी, औपनिवेशिक, विस्थापित।

मानव परिस्थितियों का दास होता है। हर व्यक्ति अपने जीवन में अमन-चैन से जीवन व्यतीत करना चाहता है, लेकिन किसी प्रकार की विपरीत जन्य परिस्थितियाँ पैदा हो जाएँ तो उससे मुक्ति पाने के लिए वह संघर्ष करता है। ऐसे में आदिवासी समुदाय के लोग हैं। आदिवासी का शाब्दिक अर्थ आदिम युग से रहने वाली जातियां। इतिहास इसका गवाह है कि औपनिवेशिक युग के पूर्व आदिवासियों की अपनी स्वतंत्र सत्ता थी। भौतिक संसाधनों की दृष्टि से अशिक्षित होते हुए भी मानवतावादी धर्म, आस्था, जीव-जंगल-जमीन और प्रकृति के संसाधनों पर उसका अधिकार था लेकिन सदियों से पहाड़ों की उबड़-खाबड़ जमीन को बसने योग्य और कृषि योग्य बनाने के बाद पूंजीपतियों द्वारा उन्हें बेदखल किया गया। उन्हें अपने आदिवासी जीवन के हुनर, कृषि ग्रामीण उद्योग, कला एवं शिल्प, हस्त कारीगरी से दूर कर उन्हें मजदूर बनने के लिए विवश किया गया। पूंजीपतियों का दोहरा चरित्र आदिवासी समाज को लाचार और अपंग बनाता गया। जंगलों में घूमते-घूमते उनके पांव पथरा गये, कमर झुक गयी और एक जून की रोटी की व्यवस्था में दर-दर घुमने लगे।

आदिवासी समुदाय की समस्या को लेकर एक सशक्त विचार रवि कुमार गोंड़ की कविताओं में पाया जाता है। इनके तीन कविता संग्रह 'आदिवासी अभिव्यक्ति' यह एक लम्बी कविता है। 'आदिवासी संघर्ष यात्रा' यह **22** कविताओं का संग्रह है तथा 'आदिवासी स्वर' यह **72** कविताओं का संग्रह है। आदिवासी समुदाय के जीवन में आनेवाली लाचारी, भुखमरी, पीड़ा, अशिक्षा एवं बेरोजगारी जैसी समस्याओं का यथार्थ चित्रण उनकी रचनाओं में देखा जा सकता है। साथ ही समग्र आदिवासी

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 2, Issue 3, November 2022 Impact Factor: 6.252

समाज की सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक धरोहर जैसी धरोहर से मजबूत देखना चाहता है। 'आदिवासी अस्मिता का सवाल' में वीर भारत तलवार लिखते हैं कि "आदिवासी विद्रोह तो बहुत हुए कभी औपनिवेशिक शोषण के खिलाफ तो कभी सामंती शोषण के खिलाफ। लेकिन आत्मसम्मान का वह आन्दोलन नहीं हुआ जो उनको आत्म गौरव प्रदान करे और उनकी अस्मिता की रक्षा के लिए उनको खड़ा होना चाहिए।" ऐसी परिस्थितियाँ को रवि कुमार गोंड़ अपने काव्य से जोड़ कर देख रहे हैं-

"मैं आदिवासी हूँ,
मैं जंगल का वासी हूँ।
प्रेम, एकता, भाई-चारगी।
अभी भी संजोए रखा है मैंने
अस्सी प्रतिशत प्राकृतिक संसाधन
हमारे क्षेत्र में मिलते हैं
फिर भी आज हम हाशिए पर हैं।
आखिर क्यों ?
आज मैं प्रश्न करूंगा.
जबाब तुम्हें देना होगा।
क्योंकि यह मेरे.....।"**1**

आदिवासियों का शोषण और दुःख का मार्मिक स्वर इनकी कविताओं में सुनाई पड़ता है। आदिवासी समाज के लोगों का जंगल ही जीवन था, लेकिन इनके पूर्वजों ने जीवन जीने की परम्परा, रीति-रिवाज, धार्मिक कर्म आदि को बचाने के लिए संघर्ष करते रहे। कभी भी उन्हें विकास

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 2, Issue 3, November 2022 Impact Factor: 6.252

की मुख्यधारा में शामिल नहीं होने दिया जिसका परिणाम हुआ कि वह जीवन जीने की कला से अनभिज्ञ हो गये सरकारी मिशनरियाँ और कल-कारखाने स्थापित करने वाले पूंजीपतियों ने इनको बेघर कर दिया। अधिकार और हक की मांग करने पर इन्हें नक्सली का नाम दे दिया गया देश में भौतिक संसाधनों की भरमार एवं भारत डिजिटल इण्डिया बनने का सपना देख रहा है और दूसरी तरफ आदिवासी समाज को भोजन, पानी, घर, चिकित्सा, शिक्षा एवं रोजगार की मूलभुत सुविधाओं के लिए दर-दर की ठोकरें खानी पड़ रही हैं। रमणिका गुप्ता 'आदिवासी आकाक्षाओं के धूमिल क्षितिज' से लिखती हैं कि - "जंगल बाघ कम हो जाने पर चिंता हो रही है पर आदिवासी के पलायन, विस्थापन व आसमान छूती मृत्यु दर को प्राथमिकता देकर समाधान की जरूरत महसूस नहीं होती। यह उपेक्षा अविश्वास पैदा करती है। जंगल धड़ाधड़ काटे जा रहे हैं और काट दिए गये हैं। यहाँ तक की जंगल कटने से और खदानों के कारण जमीन धंसने, आग लगने, वर्षा न होने पर सूखा व अकाल पड़ने से पर्यावरण भी खतरे में पड़ गया है। धरती की उर्वरा शक्ति खत्म होने लगी-तब से बाहरी गंध भरी हवा मिट्टी के कण-कण में फैलकर, उसकी उर्वरा शक्ति को नष्ट कर रही है।"**2**

आदिवासी समुदाय की महिलाओं की समस्या को कवि ने यथार्थ के साथ प्रस्तुत करने की कोशिश की है। जीवन के यथार्थ की समस्याएँ उनके उपर पड़ने वाले परिस्थितियों के परिप्रेक्ष्य में देखने का सार्थक प्रयास किया है-एक स्त्री, उसका वजूद दर्ज है इतिहास के पन्नों में जुर्म की स्याही से हैवानियत की कलम से लिखा गया उसका इतिहास।**3**

स्त्री के अस्तित्व को परम्परागत समाज पितृसत्ता के आधार पर स्वीकार करता है। स्त्री की लाचारी, बेवसी पुरुष के लिए महत्व नहीं रखती क्योंकि पुरुष ही अधिकांश व्यवस्थाओं का मालिक बना हुआ है। आदिवासी समाज की महिलाओं की समस्या बहुत ही जटिल है, उनकी गरीबी, लाचारी

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 2, Issue 3, November 2022 Impact Factor: 6.252

के कारण उच्च वर्गों के हैवानियत का शिकार होती रहती है। ईट भट्टों पर काम करने से लेकर घरों में बर्तन मांजने का कार्य करती हैं और सड़कों किनारे गुजर-बसर करना पड़ता है। वैसे तो इनके इतिहास को उठाकर देखा जाये तो इनकी अपनी संस्कृति के प्रति अधिकनिष्ठा दिखाई देती है। वन देवी की पूजा, वृक्षों, नदियों, पहाड़ के प्रति प्रेम, त्यौहार, संगीत, नृत्य, लोककलाओं का प्रदर्शन आदि इनके निष्ठा प्रेम और ईमानदारी से जीवन जीने का इतिहास रहा है। लेकिन आज विकासशील भारत के दौर में आदिवासी समुदाय के लोगों को उनकी पैतृक धरोहर से दूर तक का एक बड़ा परिवर्तन दिखाई दे रहा है। सभी समस्याओं को लेकर आज का कवि देश के सामने उनकी आवाज को पहुँचा रहा है। रवि कुमार गोंड़ की कविताएँ उनके पक्ष में खड़ी दिखाई दे रही हैं-

"आज हम संघर्षरत हैं,
अपनी भाषा-लिपि अस्मिता के प्रति
हाशिए पर है, आज भी हमारा जीवन
तो क्या हुआ
फिर भी हम उठेंगे
लड़ेंगे, जीतेंगे सारे जहाँ को
ऐसा नहीं है कि
हम आगे बढ़ना नहीं चाहते
बस एक बार बढ़ने का मौका तो दो....।"**4**

कविता में आदिवासी आदिम काल से ही अस्तित्व और अस्मिता को बचाने के लिए सदैव संघर्षरत दिखाया गया है, क्योंकि पूंजीपतियों द्वारा समय-समय पर उनकी पहचान को मिटाने का प्रयास किया जाता रहा है तीर-धनुष आदिवासी समाज की पहचान रही है। वर्तमान समय में

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 2, Issue 3, November 2022 Impact Factor: 6.252

विकास का मार्ग शिक्षा, रोजगार एवं जागरूकता से तय किया जाता है। अपने बुनियादी हकों के लिए एकत्रित होकर विकास की मुख्यधारा में शामिल वह होने का मौका चाहता है। नियति पर अपना अधिकार नहीं होता, यदि ईश्वर ने मुझे आदिवासी परिवार में जन्म दे ही दिया तो मेरा क्या जन्म लेना दोष है। मुझे जन्म लेने के आधार पर जीवन संघर्ष करना ही है। हाँ यदि मुझे भी भोजन, कपड़ा, मकान, शिक्षा, स्वास्थ्य आदि की व्यवस्था में भी सामाजिक, राजनैतिक, संस्कृति, शैक्षणिक व्यवस्था में शामिल होकर किया जाए तो मैं अपनी योग्यताका प्रदर्शन कर सकता हूँ।

आदिवासी समुदाय की पीड़ा को रचनाकार अपने शब्दों के माध्यम से उस सच्चाई को रखना चाहता है जो सामाजिक रूप से उपेक्षित एवं विकास की धारा से कोसों दूर हो गये, अगर आज आदिवासी समाज में सामूहिकता आज भी पहले जैसा ही प्रबल होता तो आज आदिवासी समाज में एक जुटता क्यों नहीं दिखाई देती ? इसकी यह वजह है कि इनकी समस्याओं पर सरकारी संस्थाओं द्वारा संज्ञान नहीं लिया जाता। भ्रष्टाचार का बोलबाला है, यदि वह अपनी समस्या लेकर किसी सरकारी महकमें में जाता भी है तो वहाँ भी उसे शोषण, उत्पीड़न एवं उपेक्षा का शिकार बनना पड़ता है क्योंकि आदिवासी के विकास को लेकर यह समस्या खड़ी होती रहती है। ऐसा कुछ' उलझन' शीर्षक में देखा जा सकता है- किसे सुनाये जाकर हम, अपनी पीड़ा भरी फरियाद लूट-खसोट का कोहराम कहीं पर हत्या, कहीं पर बलात्कार साथ में भ्रष्टाचार का चमत्कार। अरे! इधर गिरूँ तो कुँआ है, उधर गिरूँ तो खाई।**5**

आदिवासी समुदाय का विस्थापित होने के पीछे प्रमुख कारण देश में औपनिवेशिक राज्यसत्ता और पूंजीवादी का स्वार्थी विकास माडल उनके शोषण का पूरा-पूरा जिम्मेदार है। सरकारी संस्थाओं के पास किसी का समाधान नहीं है। ऐसी स्थिति में किसी को मजबूर होकर रोजी-रोटी के लिए कोई न कोई कदम उठाना पड़ सकता है, उसके विरोध का कारण या तो वहाँ से विस्थापित होना

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 2, Issue 3, November 2022 Impact Factor: 6.252

या विरोध में हथियार उठाकर हिंसक रूप धारण कर लेंना ही रास्ता सूझेगा। यह वजह है कि ये समाज झोंपड़ पट्टी डालकर किसी तरह से अपना जीवन व्यतीत कर रहे हैं। अपनी कविता 'मैं बागी हूँ' से कवि बताना चाहता है कि मुझे शौक नहीं है किसी व्यवस्था का विरोध करना, विरोध करना भी एक विवशता है। हमारी बहु-बेटियों पर हो रहे हैं घोर अत्याचार और बलात्कार तो इस पर चुप रहना। हमारी कायरता होगी हम आज तक कभी कायर नहीं हुए, हमारी यश गाथाओं की झलक मिलेगी तुम्हें इतिहास के पन्नों में परन्तु तुम लोग पढ़ोगे क्यों ? मनुष्य होने के कारण हमारी मर्यादा है, इज्जत है, सामाजिकता है, जीवन है। हो सकता है तुम्हारी नजर में हमारे लिए कोई स्थान न हो यदि ऐसा होता रहा संघर्ष और तेज होगा।

काव्य संकलन 'आदिवासी संघर्ष यात्रा' में आदिवासी जीवन की यथार्थ बोध सच्चाई की रखने का भरपूर प्रयास किया है। जीवन के बुनियादी अधिकारों में वैचित करने वाली नीतियों के विरोध की अभिव्यक्ति है। इस समाज में वीर पुरुषों का राजनैतिक, सामाजिक विद्रोह का इतिहास रहा है क्योंकि संभ्रान्त समाज अपना इतिहास रचने में लगा रहता है दसरे के इतिहास को पढने में विश्वास कम रखता है।

आदिवासी समुदाय की समस्याओं को दृष्टि में रखकर लिखे जाने वाले साहित्य को किसी न किसी रूप में उसे अनसुनी करने का प्रयास होता रहा है। सत्ता पक्ष द्वारा उस पर बंदिशें लगायी जाती रही हैं। इतने के बावजूद भी आदिवासी रचनाकार आये दिन हो रहे अमानवीय कृत्यों के विरोध में लिख रहे हैं। रवि कुमार गोंड़ अपनी रचनाशीलता से आदिवासी समुदाय की स्त्री पुरुष के जीवन में व्याप्त पीड़ा, त्रासदी, अत्याचार की गाथा को उजागर किये हैं जो पूंजीपतियों, जमीदारों, शासन-प्रशासन की अतिशय क्रूरता, शोषण, अत्याचार, बलात्कार जैसी विद्रूपताओं का पर्दाफाश इनकी कविता में है। इससे छुटकारा पाने के लिए शांति से उनके हित की योजना को संचालित करे

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 2, Issue 3, November 2022 Impact Factor: 6.252

और समावेशी विकास को महत्व दे जिससे उनकी स्थिति में सुधार हो सके। उन निचले पायदान पर गुजर-बसर करने वाले को उनका हक और अधिकार दिला पाना ही देश के विकास में सहायक होगा और तभी देश उन्नति कर सकेगा साथ ही आदिवासी समाज का विकास होगा।

सन्दर्भ :

1- आदिवासी स्वर - कविता संग्रह- रवि कुमार गौड़, आनंद प्रकाशन नई दिल्ली पृ0 सं0 34

2- आजकल- जनवरी- 2010- पृ0 सं0 67

3- आदिवासी स्वर- कविता संग्रह- रवि कुमार गौड़, आनंद प्रकाशन नई दिल्ली पृ0 सं0 38

4- वही पृ0 सं0 40

5- वही पृ0 सं0 47